PM मोदी ने 70 दिन में की 142 रैलियां, 40% उप्र, बंगाल, ओडिशा में, 143 सीटें इन्हीं 3 राज्यों में

प्रधानमंत्री मोदी ने सबसे ज्यादा 29 रैलियां उत्तर प्रदेश में कीं. इसके बाद तृणमूल कांग्रेस शासित पश्चिम बंगाल में 17 और बीजद शासित ओडिशा में आठ रैलियां कीं.

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा चुनाव अभियान के दौरान 142 रैलियां कीं, जिसमें चार रोड शो शामिल हैं. कुल रैलियों में से 40 फीसदी रैलियां उन्होंने उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और ओडिशा में की. इन तीनों राज्यों में लोकसभा की कुल 143 सीटें हैं. प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश के मेरठ से अपने चुनाव प्रचार अभियान की शुरुआत की थी और मध्य प्रदेश के खरगोन में इसका समापन किया. मोदी ने चार रोडशो भी किए और आखिर में एक संवादाता सम्मेलन में भी शामिल हुए.

प्रधानमंत्री ने सबसे ज्यादा 29 रैलियां उत्तर प्रदेश में कीं. इसके बाद तृणमूल कांग्रेस शासित पश्चिम बंगाल में 17 और बीजद शासित ओडिशा में आठ रैलियां कीं. वर्ष 2014 लोकसभा चुनाव में भाजपा ने उत्तर प्रदेश में भारी जीत दर्ज की थी और 80 में 71 सीटें जीती थी. बंगाल में 42 सीटों में से भाजपा को केवल दो मिली थीं और ओडिशा में 21 सीटों में से एक सीट मिली थी.

प्रधानमंत्री ने इस बार यूपी में सबसे ज्यादा समय इसलिए दिया, क्योंकि वहां दो चिरप्रतिद्वंद्वी समाजवादी पार्टी (सपा), बहुजन समाज पार्टी (बसपा) और राष्ट्रीय लोकदल (रालोद) ने गठबंधन कर लिया है और इससे माना जा रहा है कि इस बार भाजपा के लिए यहां राह आसान नहीं होगी. बीजेपी पश्चिम बंगाल और ओडिशा में अपना नंबर दुरुस्त करना चाहती है और इसीलिए प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश के बाद इन दोनों राज्यों में सबसे ज्यादा रैलियां कीं.

प्रधानमंत्री और भाजपा का कहना है कि पश्चिम बंगाल की मदद से पार्टी 300 से ज्यादा सीटें हासिल करेगी, लेकिन एक वरिष्ठ भाजपा नेता ने नाम नहीं जाहिर करने की शर्त पर आईएएनएस से कहा कि पश्चिम बंगाल में आक्रामक प्रचार से पार्टी को उम्मीद है कि बहुमत हासिल हो जाएगा. भाजपा नेता ने कहा, पार्टी को उम्मीद थी कि उत्तर प्रदेश में कम से कम 60 सीटें मिलेंगी, लेकिन ऐसा लग नहीं रहा. इसे महसूस करते हुए ही पार्टी नेतृत्व ने पश्चिम बंगाल में आक्रामक प्रचार किया.

पार्टी पिछले दो सालों से पश्चिम बंगाल और ओडिशा में अपनी रणनीति बनाने में जुटी थी. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने कई नेताओं शिव प्रकाश, सौदान सिंह और अरविंद मेनन को वहां भेजा था. भाजपा के एक नेता ने आईएएनएस से कहा कि हिंदी पट्टी के तीन राज्यों मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में विधानसभा चुनावों में पराजय के बाद पार्टी ने संघ के जमीनी कार्यकर्ताओं को इन दोनों राज्यों में नियुक्त किया था. उन्होंने कहा, इन दोनों राज्यों में पार्टी का लक्ष्य कम के कम 30 सीटों का है.

इन राज्यों के अलावा मोदी ने बिहार, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक और गुजरात में कुल मिलाकर 50 रैलियां कीं. इन छह राज्यों में लोकसभा की 196 सीटें हैं, जिनमें से भाजपा ने पिछले चुनाव में 150 जीती थी. सहयोगी दलों के साथ उसने वर्ष 2014 में 167 सीटों पर जीत दर्ज की थी.

कर्नाटक में जलसंकट, मंदिर के पुजारी ने कहा- जब तक बारिश नहीं होती, न आएं श्रद्धालु

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

दक्षिण कन्नड़. कर्नाटक में जलसंकट को लेकर राज्य के जल मंत्री डीके शिवाकुमार ने हाल ही में चिंता जाहिर की थी. राज्य में जलसंकट इस कदर हावी हो चुका है कि शनिवार को दक्षिण कन्नड़ में स्थित एक मंदिर के धर्माधिकारी ने भक्तों को दर्शन के लिए आने से मना कर दिया है. न्यूज एजेंसी एएनआई के अनुसार, कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ में स्थित धर्मस्थल मंजूनाथेश्वरा मंदिर के धर्माधिकारी डॉ. वी. हेगड़े ने पर्यटकों से अनुरोध किया है कि वे अपनी मंदिर के दर्शन की यात्रा को स्थगित कर दें. धर्माधिकारी का कहना है कि मंदिर क्षेत्र पानी के अभाव से जूझ रहा है. ऐसे में पर्यटकों के आने से समस्या और गंभीर हो जाएगी.

हजारों श्रद्धालुओं के लिए पानी की व्यवस्था करना चुनौती- कर्नाटक सरकार के मंत्री

धर्माधिकारी ने पर्यटकों से अनुरोध करते हुए यात्रा को टालने की बात कही. उन्होंने कहा कि क्षेत्र के लोग पानी की समस्या से दो-चार हो रहे हैं. मैं भक्तों और पर्यटकों से अनुरोध करता हूं कि बारिश होने तक अपनी यात्रा को स्थगित कर दें. वहीं, इस मामले के सामने आने पर कर्नाटक सरकार के मंत्री कृष्ण बाइर गौड़ा ने कहा कि घटना के संज्ञान में आते ही इसे हल करने के लिए दिशा-निर्देश जारी कर दिए गए हैं. हम देखेंगे कि हम क्या कर सकते हैं. उन्होंने कहा कि धर्मस्थल में हजारों श्रद्धालुओं का आगमन होता है. उन सबके लिए पानी की व्यवस्था करना एक चुनौती है लेकिन हम इसका कुछ हल निकाल लेंगे.

महाराष्ट्र सरकार ने पानी देने से किया मना- जल मंत्री

डीके शिवकुमार कर्नाटक सरकार के जल मंत्री डीके शिवकुमार ने शनिवार को कहा था कि पहले महाराष्ट्र सरकार ने हमारे अनुरोध के बाद कृष्णा नदी में पानी छोड़ने के लिए सहमति व्यक्त की थी. लेकिन, अब वे कृष्णा नदी में पानी नहीं छोड़ रहे हैं. कागवाड़ और अथानी के किसानों और वहां रहने वालें लोगों के लिए हम इलक्कल बांध से भंडारण का अंतिम 1 टीएमसी जारी कर रहे हैं.

महाराष्ट्र में भी खराब हैं हालात

वहीं, तापमान बढ़ने के साथ महाराष्ट्र के 26 जलाशय लगभग खाली हो गए हैं और पिछले साल की तुलना में इस साल स्थिति कहीं अधिक गंभीर है. राज्य सरकार के जल संरक्षण विभाग की वेबसाइट के मुताबिक औरंगाबाद संभाग में जल भंडारण पिछले साल की इसी अवधि की 23.44 प्रतिशत की तुलना में इस साल 0.43 प्रतिशत पर पहुंच गया है. इस संभाग में औरंगाबाद, बीड़, हिंगोली, परभनी और उस्मानाबाद जिले आते हैं. विभाग के मुताबिक इस संभाग के बांधों में पैठन, मंजारा, मजलगांव, येलदारी, सिद्धेश्वर, निचला तेरणा, सिन कोलेगांव और निचला धुदना के सभी जलाशयों में इस वक्त 'जल भंडारण' शून्य स्तर पर पहुंच गया है.

मध्य प्रदेश: कार शोरूम में लगी भीषण आग, लाखों का सामान जलकर खाक

मध्य प्रदेश के बैतूल में सुबह एक कार शोरूम में भीषण आग लग गई।

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

बैतूल। मध्य प्रदेश के बैतूल में आज सुबह एक कार शोरूम में भीषण आग लग गई। आग की वजह से शोरूम में रखा लाखों का सामान जलकर खाक हो गया। हादसे में फिलहाल किसी के हताहत होने की कोई खबर नहीं है।

शोरूम में आग लगने की सूचना मिलने के बाद दमकल विभाग की गाड़ियों ने मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पाया। पुलिस की टीम और प्रशासन के अधिकारी भी मौके पर मौजूद हैं। राहत एंव बचाव कार्य फिलहाल जारी है।

भारत की आधी आबादी इस Silent Killer बीमारी से हैं अनजान; रहना होगा सावधान

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

नई दिल्ली। भारत में 15 से 49 आयु वर्ग के केवल आधे वयस्क अपनी डायबिटीज यानी मधुमेह की स्थिति के बारे में जानते हैं। इस बीमारी से ग्रस्त सिर्फ एक चौथाई लोगों को इलाज मिल पाता है और उनकी रक्त शर्करा नियंत्रण में रहती है। एक नए अध्ययन में यह बात सामने आई है। मधुमेह से निपटने के लिए सबसे पहले लोगों को इसके बारे में जानकारी होना जरूरी है। लेकिन, इससे ग्रस्त 47.5 फीसद लोगों को अपनी बीमारी के बारे में पता ही नहीं होता। इस कारण उन्हें इलाज नहीं मिल पाता। डायबिटीज से ग्रस्त

ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले गरीब और कम शिक्षित लोगों को देखभाल सबसे कम मिल पाती है।

इस अध्ययन में राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार सर्वेक्षण के वर्ष 2015-16 के आंकड़ों का उपयोग किया गया है, जिसमें 29 राज्यों एवं सात केंद्र शासित प्रदेशों के 15-49 वर्ष के 7.2 लाख से अधिक लोग शामिल थे। यह अध्ययन नई दिल्ली स्थित पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन और अन्य संस्थाओं ने मिलकर किया है। शोधकर्ताओं ने पाया कि मधुमेह से पीड़ित 52.5 फीसद लोग अपनी बीमारी की स्थिति के बारे में जानते हैं। लगभग 40.5 फीसद लोगों ने बताया कि वे इससे नियंत्रण में रखने के लिए दवा ले रहे हैं। जबकि, कुल मधुमेह ग्रस्त लोगों में से सिर्फ 24.8 फीसद लोगों का मधुमेह नियंत्रण में पाया गया है।

मधुमेह रोगियों में से केवल 20.8 फीसद पुरुषों और 29.6 फीसद महिलाओं में ब्लड शुगर का स्तर नियंत्रण में पाया गया है और वे मधुमेह नियंत्रण के लिए दवाएं ले रहे हैं। हालांकि, लगभग आधे मधुमेह पीड़ित अपने उच्च रक्तचाप की स्थिति से परिचित नहीं हैं। गोवा और आंध्र प्रदेश में ऐसे लोगों की संख्या सबसे अधिक है, जिन्हें मधुमेह का पता नहीं है। शोधकर्ताओं का कहना है कि उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्यों में डायबिटीज के मरीजों की संख्या कम है, पर ऐसे लोग बड़ी संख्या में हैं जो अपनी मधुमेह स्थिति से अनजान होने के साथ इलाज से भी वंचित हैं। इस अध्ययन के नतीजे शोध पत्रिका बीएमसी मेडिसिन में प्रकाशित किए गए हैं।

क्या है डायबिटीज

डायबिटीज जिसे सामान्यत: मधुमेह कहा जाता है। एक ऐसी बीमारी है जिसमें खून में शर्करा का स्तर बढ़ जाता है। उच्च रक्त शर्करा के लक्षणों में अक्सर पेशाब आना होता है, प्यास की बढ़ोतरी होती है, और भूख में वृद्धि होती है। अमेरिका में यह मृत्यु का आठवां और अंधेपन का तीसरा सबसे बड़ा कारण बन गया है। आजकल पहले से कहीं ज्यादा संख्या में युवक और यहां तक की बच्चे भी मधुमेह से ग्रस्त हो रहे हैं।